विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली

द्वारा पोषित

लघु शोध परियोजना

सारांश

भारतीय समकालीन कला के परिप्रेक्ष्य में रचनासामग्री (माध्यम) कीभूमिका

(चित्रकला और मूर्तिकला के विशेष संदर्भ में)

2014

प्रधान अन्वेषक

डॉ॰ रवीश कुमार

असि॰प्रोफेसर,चित्रकला विभाग,

एम॰एच॰ पी॰जी॰ कॉलेज,मुरादाबाद

सारांश

भारतीय कला का जन्म वर्षों पुराना है।वह अब गुफाओं–कन्दराओं से निकलकरसिन्धुसभ्यता, अजंता, जैन, राजपूत, मुगल, पहाड़ी,दिल्ली कलम, लखनऊ कलम, दक्षिण कलम, कम्पनी, बंगाल व आधुनिक कला शैली के विभिन्न सोपानों से गुजरते हुए समकालीन दौर में पहुँच गई है और अपना विस्तृत रूप धारण कर चुकी है। वह अब सौन्दर्य की मोहताज नहीं है। उसके अर्थ बदल चुके हैं। अमूर्तन से इंस्टालेशन तथा कान्सेप्चुअल आर्ट, कम्प्यूटर कला तक के अभिनव प्रयोग कला जगत को समृद्धशाली बना रहे हैं। यह सत्य है कि भारतीय कलाकारों ने पाश्चात्य कला से अनेक प्रयोग आयातित किए किन्तु यह भी सत्य है कि उन्होंने अपने प्रयोग भी किए, चाहे वह चित्रकला के क्षेत्र में हो या मूर्तिकला के या फिर दोनों के सामंजस्य में। भारतीय कलाकारों के प्रयोग पश्चिमी कलाकारों की तरह विचित्र तो नहीं परन्तु नयापन और गाम्भीर्य से परिपूर्ण हैं। उन्होंने नये माध्यम और नयी विधा के साथ भारतीय कला को नई ऊँचाईयों तक पहुँचाया है जिसके परिणाम स्वरूप आज विश्व स्तर पर भारतीय कला को स्वीकार किया जाने लगा है।

भारतीय कला को इस ऊँचाई तक पहुँचाने में जिस महत्वपूर्ण वस्तु का हाथ रहा है वह है रचना सामग्री अर्थात् माध्यम।माध्यम कलाकृति के लिए एक ऐसा महत्वपूर्ण साधन है जिसके अभाव में शायद ही किसी कलाकृति का निर्माण हो। कलाकृति का निर्माण करने के लिए हमें किसी न किसी सामग्री की आवश्यकता होती है और इसी सामग्री की सहायता से ही किसी कृति का अंकन सम्भव है। कला की कोई भी विधा इससे अछूती नही है। चित्र हो या मूर्ति या फिर कोई अन्य कला सभी में माध्यम विशेष महत्व रखता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अन्तर्राष्ट्रीय कला धाराओं के साथ कदम मिलाकर चलने वाली चित्रकला की प्रवृत्तियों और चित्रकारों ने ही भारतीय समकालीन कला को विश्व में एक नई पहचान दी है। परिवर्तन के इस युग में नई अन्तर्दृष्टि, नई अभिव्यक्ति, नई शैलियाँ व नये ढाँचे विकसित हो रहे हैं। अब कलाकार की अपनी अभिव्यक्ति अपने प्रतीक, राजनीतिक–सामाजिक व साँस्कृतिक पक्षों के विचित्र मिश्रण, वैयक्तिक फंतासी, जिसमें व्यंग्य या काव्यात्मक रहस्यवाद के भी लक्षण होते हैं, के प्रयोग पर अधिक बल दिया जा रहा है। कुछ कलाकार सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं को अपने चित्रों का विषय बना रहे हैं। तो कुछ अपनी सौन्दर्य–भावना को प्रतीकात्मक व रहस्यवादी तरीके से अभिव्यक्त कर रहे हैं। कुछ अन्य कलाकार स्वप्नलोक व काव्यात्मक को अपने चित्रों में स्थान दे रहे हैं। ताकि अपने परिवर्तनशील भावनाओं को एक निजी मुहावरों तथा खोज के माध्यम से प्रस्तुत कर सकें। परितोष सेन, ए॰ रामचन्द्रन, विकास भट्टाचार्य, जोगेन चौधरी, सुनील दास, राजेश मेहरा, धीरज चौधरी, श्मशाद हुसैन, मनु पारेख, उमेश वर्मा,

सूरज घई, अर्पणा कौर आदि ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने अपने समय के सामाजिक राजनीतिक तथा आर्थिक अव्यवस्था से सम्बन्धित अपने निजी अनुभावों को अपनी कलाकृतियों में अभिव्यक्त किया।

जहाँगीर सबावाला प्रकृति के परिचित रूपाकारों को फंतासी में व्यक्त करते हैं। सुब्रमण्यम मातीस के समान सादगी से परिपूर्ण चित्रों की रचना करते हैं। कृष्ण खन्ना रंग के प्रति एक नई चेतना का पदार्पण करते हैं। उनके चित्र शारीरिक प्रक्रिया को अभिव्यक्ति का एक साधन बनाने के प्रति अपना सरोकार प्रकट करते हुए दिखाई देते हैं जिनमें एक प्रकार का कठोर अर्द्ध–यथार्थवाद है। तैयब मेहता रूपाकारों व वस्तुओं के बनावटी तत्वों, उनकी तार्किक शक्तियों तथा तनावों का अंकन करते हैं। वे स्वतन्त्रता से एक–दूसरे को काटने वाले या अमूर्तित रूपाकार का प्रयोग करते हैं। जिससे गति के परस्पर–सम्बन्धों को पकड़ा जा सके। 'रामचन्द्र ने विरूपित यथार्थ तथा सामाजिक दृष्टि से अर्थवान खंडित आकारों से आगे बढ़ते हुए भारतीय चित्रकला के क्लासिकल आदर्शों तथा मानव आकृति के सौन्दर्य की अवधारणा को अपनाया, अकादमिक यथार्थवाद की दृष्टिक्रम तथा छाया–प्रकाश योजना से आगे बढ़ते हुए लाक्षणिक रूपाकार तथा छाया व प्रकाश के स्वेच्छाचारी स्वरूप को अपनाया।'[8] गुलाम मोहम्मद शेख मुगल, राजपूत एवं पर्शियन कला से प्रभावित होकर चित्र सृजन में लगे हैं।' इन पर यूरोप के यथार्थवाद तथा इटली के अतियथार्थवाद का प्रभाव भी देखा जा सकता है। अंजलि इला मेनन ने अमूर्त कला से लेकर यथार्थ क्लासिकल विश्लेषण कला तक एक लम्बा सफर तय किया। उनके चित्रों में बाइजैन्टाइन की सी रंगों की चमक, रूसी चित्र–प्रतिमाओं के लालित्य जैसी आकृतियाँ और चीनी लाक्षापात्रों जैसे छदिमा (पैंटिना) देखे जा सकते हैं। मंजीत बावा की आकृति मूलक बिंबमाला, पश्चिम के अकादमिक या समकालीन भारतीय चित्रकारों द्वारा आकृति के आधुनिक विश्लेषण की तुलना में, कहीं अधिक ताजगी भरी है, इसमें स्थानीय देशज आस्वाद है।'[9] अर्पिता सिंह, जतिन दास, विवान सुन्दरम, गोगी सरोज पाल, जय झरोटिया, अर्पणा कौर, सुबोध गुप्ता, अतुल डोडिया, गोपी गजवानी, शैल चोयल, राजीव लोचन, संजय भट्टाचार्य, सुधीर पटवर्धन, रामेश्वर ब्रूटा, विकास भट्टाचार्य, प्रभाकर बर्वे आदि जैसे अनेक कलाकार हैं जो समकालीन भारतीय कला को अपनी विशिष्ट शैली व तकनीक के माध्यम से समृद्ध करने में जुटे हुए हैं।

चित्रकला की अपेक्षा मूर्तिकला की परम्परा के विकास में कुछ अधिक समय लगा। हालांकि आधुनिक मूर्तिकला तार्किक, प्रयोगवादी तथा अतृप्त है जिससे यह विधा विकास की और उन्मुख हुई। 1930के आस–पास मूर्तिकला को एक नई दिशा मिली जिससे आगे चलकर भारतीय मूर्तिकला के क्षेत्र में विभिन्न पद्धतियों व माध्यमों में स्वतन्त्र रूप से प्रयोग होने शुरू हो गये। 20वीं सदी के उतरार्द्ध में कुछ कलाकारों ने गैर वस्तुनिष्ठ मूर्तिशिल्प की नई अवधारणा से परिचय कराया। उन्होंने प्रकृति को विशुद्ध अथवा गणितीय प्रतिमान रूप में दिखाने की चेष्टा की, जो मानव निर्मित वातावरण से नहीं बल्कि मानवीय मस्तिष्क की उपज थे।गुजराल, अमरनाथ, प्रदोषदास, रामकिंकर आदि ऐसे मूर्तिकार थे जिनके सृजनात्मक कार्य ने न केवल नई दिशा दी बल्कि अलग तरह से देखना सिखाया और साथ ही निस्संकोय स्वतन्त्रता से काम करने की भी प्रेरणा दी।

समकालीन कलाकार अब पारम्परिक स्रोतों से प्रेरित हैं। वह अपनी कलाकृतियों में भारतीयता लाने में उत्सुक रहते हैं। इसके लिए वे भारतीय विषयों, प्रतीकात्मक तत्वों, आदिवासी या लोक रूपाकारों अथवा चित्रप्रतिमात्मकता को भी अपनाने में जरा–सा भी संकोच नहीं करते। इसीलिए आज हमारी मूर्तिकला भी चित्रकला की भाँति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी धाक जमाए हुए है। तत्कालीन कला में जहाँ तक सामाजिक सन्दर्भों की बात है तो यह प्रवृति नई नहीं है। इसे रामकिंकर बैज, धनराज भगत, अमरनाथ सहगल और प्रदोष दासगुप्ता की कृतियों में देख सकते हैं।एलेक्स मैथ्यू, वालसन कोल्लेरी, जोजो, रवीन्द्रन रेड्डी, बसंत के॰ शर्मा, ओम प्रकाश खरे, पृथपाल एस॰ लाडी, ध्रूव मिस्त्री, एम॰ एस॰ रावल, रजत कुमार घोष और सी॰ जगदीश एसे संभावनाशील तथा प्रतिभाशाली मूर्तिकार हैं, जो समकालीन संवेदना को अपने मूर्तिशिल्पों में गभीरता पूर्वक लाने में सक्षम रहे हैं।

चित्र, मूर्तिकला व स्थापत्य कला से समानता रखने वालीसंस्थापन कलाअनुभूति के कुछ अपने दायरों में बंधी है। अत्यन्त कोमल प्रवृति की ये एक ऐसी विधा है जिसमें कुछ उपयुक्त सामग्रियों द्वारा अपनी कल्पना व अभिव्यक्ति को व्यक्त किया जा सकता है।भारतीय समकालीन कला में इसका आगमन पाश्चात्य की अपेक्षा काफी देरी से हुआ। देखा जाए तो इस तरह के संस्थापन हमारे देश में वर्षों पहले से लोक, धार्मिक व आनुष्ठानिक संस्कारों के रूप में चले आ रहे हैं, जैसे– दशहरे पर रावण के पुतलों का निर्माण, दुर्गा पूजा पर सज्जित दुर्गा प्रतिमा, किन्तु इनका निर्माण किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाता है। जिसे बाद में नष्ट कर दिया जाता है किन्तु यह उद्देश्य संस्थापन कला की निजी अभिव्यक्ति की विशिष्ट अवधारणा से भिन्न है ।

भारत में इसे सबके समक्ष प्रस्तुत करने का श्रेय एम॰ एफ॰ हुसैन को जाता है। विवान सुन्दरम, अमरनाथ सहगल, वेद नायर, सतीश गुजराल, गोगी सरोज पाल, रत्नावली कांत, शमशाद हुसैन, एन॰ पुष्पमाला, राजेन्द्र टिक्कु, चिन्तन उपाध्याय, हेमा उपाध्याय, अतुल डोडिया, अनीश कपूर, शीला गौड़ा, राजीव सेठी, अर्पणा कौर, एन॰ एस॰ रिमजोन, वॉल्सन कोलेरी, निहाल शाह, ज्योति कोल्टे, दर्शना वोरा, एम॰ जी॰ अरूण कुमार, अद्वैत चरण, गंडनायक, प्रबीर गुप्ता आदि कलाकारों ने इस विधा में अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। इनके अतिरिक्त लतिका कट्ट, शेबा छाची, सोमन, नरेश कपूरिया और रूकमणा हुसैन जैसे युवा कलाकारों ने भी संस्थापन में सृजन कार्य किया है।

चाक्षुष अभिव्यक्ति के पारम्परिक रूप से निकलकर यह कला एक नये मोड़ की ओर अग्रसर है जिसमें अस्थायित्व व परिवर्तन पर अधिक जोर दिया जा रहा है। बड़े–बड़े संस्थापन किए जा रहें हैं। जिनमें स्टूडियों, वीडियों कार्यक्रमों तथा प्रदर्शनकारी कलाओं का भी प्रयोग किया जा रहा है जिससे वास्तु, मूर्ति, डिजाइन तथा ललित कलाओं का दायरा ही समाप्त हो गया है। इसके कारण हमारी कला की अवधारणा का स्वरूप भी बदल गया है। विविध माध्यमों व तकनीकों को सम्मिलित करने से इस कला का क्षेत्र तो विस्तृत हुआ ही है। साथ ही इसमें अपार सम्भावनाएं भी बढ़ी हैं।

अब कलाकारों के पास साधनों की कोई कमी नहीं है। अब वह प्रत्येक विधा में अनेक माध्यमों में कलाकृतियों का निर्माण कर रहे हैं। उसे अनेक प्रकार की वस्तुओं की जानकारी है, वह अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए जिस वस्तु को आवश्यक समझता है उसका प्रयोग कलाकृति में कर लेता है। वस्तु वह आवश्यक सामग्रीहै जिसका उपयोग किसी भी कार्य को करने के लिए किया जाता है। इसको सामान, साधन, वस्तु, उपकरण, उपयुक्त पदार्थ, माल या द्रव्य आदि नामों से भी जाना जाता है। समस्त संसार का कोई भी कार्य इसके बिना सम्भव नहीं है। चित्रकला हो या मूर्तिकला या कोई अन्य कला सभी की सामग्री प्रारम्भ से ही अलग रही है।

समकालीन कला से पूर्व परम्परागत सामग्री का ही प्रयोग हुआ, चित्रण के लिए जहाँ छत, भित्ति, लकड़ी, पत्थर, कागज, कपडा, ताड़पत्र, चमड़ा, मिट्टी के बर्तन, धातु, हाथी दाँत, काँच आदि का प्रयोग किया गया, वहीं रंगों के लिए खनिज, प्राकृतिक, वानस्पतिक, रासायनिक, धात्विक रंगो का उपयोग हुआ और मूर्ति निर्माण के लिए पत्थर, लकड़ी, धातु, मिट्टी, प्लास्टर ऑफ पेरिस आदि को उपयोग में लाया गया। उनको बनाने के उपकरण भी परम्परागत ही थे जो लकड़ी, धातु, पत्थर व प्राकृतिक वस्तुओं से बने होते थे। आदिमानव ने भी सम्प्रेषण हेतु सर्वप्रथम चित्र बनाना ही शुरू किया, तब कुछ न होते हुए भी उसने जानवरों के खून, गेरू तथा कोयला जैसी सामग्री का उपयोग कर कमाल कर दिया। पुरातन स्थिति को बरकरार रखते हुए उसके अग्रजों ने सिंधु, बौद्ध, गुप्त, कुषाण, राष्ट्रकूट आदि कालों में चित्रों का निर्माण तो अवश्य किया किन्तु तब उनका सामग्री प्रयोग सिर्फ पत्थर, दीवार, गेरू, कोयला तथा वनस्पति रंगों तक ही सीमित रहा।

आज का युग तकनीकी युग है। यहाँ तक आते–2 चित्रों के लिए स्थान तथा चित्रण सामग्री में इतना कुछ जुड़ गया है कि इसका वर्णन करना आसाननही है पर भी हम समकालीन चित्रकला में प्रयुक्त होने वाली सामग्री को हम मुख्य रूप से दो भागों में बाँट सकते हैं–(i) चित्रण करने वाली वस्तु–सामग्री अर्थात् उपकरण। अर्थात् वह वस्तु जिससे चित्र बनाया जाता है तथा (ii) चित्रण करने की सतह अर्थात् स्थान। अर्थात् वह वस्तु जिस पर चित्र बनाया जाता है। इनके अन्तर्गत आने वाली वस्तुएं हैं–

(i) **उपकरण** :–(1) चाक, (2) कोयला(चारकोल), (3) वर्तिका, (4) पेंसिल, (5) मानव उंगुली, (6) मार्कर, (7) पेस्टल, (8) पेन और स्याही, (9) तूलिका, (10) चाकू, (11) रोलर, (12) फुहार रंजित, (13) रंग(14) रेत आदि।

(ii) **सतह** :–(1) कैनवास, (2) कागज, (3) गत्ता/सख्त गत्ता,(4) लकड़ी, (5) दीवार/भित्ति, (6) प्लास्टर, (7) स्क्रेच बोर्ड, (8) धातु फलक, (9) मानव शरीर, (10) काँच आदि।

उपकरण और सतह के अतिरिक्त ऐसी अनेक वस्तुएं भी हैं जिनका उपयोग चित्रण करने के लिए सहयोग के रूप में किया जाता है। कभी– कभी यह वस्तुएं इतनी आवश्यक हो जाती हैं कि इनके अभाव

में चित्रण कार्य करना बड़ा मुश्किल हो जाता है, किन्तु कभी– कभी इनके बगैर भी कार्य किया जा सकता है। इस प्रकार की वस्तुएं है–

सहयोगी वस्तुऐं :–(1) रबड़, (2) मापक, (3) कटर, (4) आरेखन पट्ट, (5) चित्र फालक, (6) मिश्रण पट्टिका, (7) बोर्ड पिन, (8) बोर्ड क्लिप, (9) बाश ट्रे, (10) लकड़ी का चौखटा, (11) कपड़ा, (12) तेल, (13) वार्निश, (14) स्थिरीकारक, (15) चिपकाने का फीता, (16) गोंद, (17) अण्डा, (18) दूध, (19) टेक्सचर व्हाइट, (20) एक्रेलिक रिटार्डर, (21) डिपर, (22) पानी एवं बर्तन, (2) कुंजी कस, (24) स्टेपल बंदूक और पिन, (25) कील आदि।

उपर्युक्त इन उपकरणों के अतिरिक्त घरेलू उपकरणों, हार्डवेयर आदि का भी चित्रकला में प्रयोग किया जाता है। जैसे– हथौड़ी, प्लास, कैंची, ब्लेड आदि। ऐसे अनेक उपकरण हैं जिनका प्रयोग सीधे चित्र बनाने या चित्रण कार्य करने में तो नहीं होता किन्तु चित्र सतह तैयार करने आदि जैसे कार्यों में काम आते हैं।

मूर्तिकला के सन्दर्भ में देखा जाये तो प्रारम्भ से ही पत्थर, धातु, लकड़ी व मिट्टी से मूर्ति बनाने की परम्परा रही है और समकालीन कला से पूर्व तक सीमित सामग्री में ही मूर्तियों का निर्माण होता रहा, किन्तु अब मूर्ति मिट्टी, पत्थर, धातु, लकड़ी के अतिरिक्त चीनी मिट्टी, प्लास्टर ऑफ पेरिस, फाईबर आदि जैसी अनेक सामग्रियों में भी बनने लगी हैं और इनके साथ ही इनमें विविध वस्तुओं का समन्वय कर श्रेष्ठ मूर्तियां बनाई जा रही हैं। सरलता से समझने के लिए मूर्ति निर्माण में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं को हम दो भागों में बाँट सकते हैं– (1) **पदार्थ सामग्री**– वह वस्तु जो मूर्ति बनाने के लिए प्रयोग की जाती है अर्थात् जिसकी मूर्ति बनती है। जैसे–पत्थर, मिट्टी, लकड़ी, धातु आदि तथा (2) **उपकरण**– वह औजार जो मूर्ति निर्माण हेतु प्रयुक्त किए जाते हैं।

(1) पदार्थ सामग्री :– (अ) नक्काशी सामग्री :– (i) अस्थि (ii) पत्थर (iii) लकड़ी (iv) बर्फ (v) प्लास्टर (vi) सीमेंट (vii) मोम आदि।

(ब) ढलाई सामग्री :– (i) धातु (ii) प्लास्टर (iii) मोम (iv) प्लास्टिक (vi) सीमेंट (vii) सिन्थेटिक राल (viii) काँच आदि।

(स) मॉडलिंग सामग्री :– (i) मिट्टी (ii) प्लास्टर (iii) रेत (iv) कागज़ की लुगदी (v) गत्ता आदि।

(द) सहयोगी सामग्री :– (i) पानी (ii) आग (iii) धातु गलाने का पात्र (बर्तन) (iv) आधारभूत ढ़ांचा (v) एसिड (vi) रंग आदि।

(2) उपकरण :– 1. छैनी 2. हथौड़ा 3. शिकंजा 4. खुरचनी 5. चाकू 6. सरौता 7. ऑक्सी ईंधन 8. आरा 9. कुम्हार का चाक 10. स्निप्स 11. विकर्ण चिमटा 12. रेगमाल 13. खड़े बालों का ब्रुश 14.

विद्युत उपकरण 15. मिट्टी सफाई उपकरण 16. मिनी रिबन या लूप उपकरण 17. क्ले मॉडलिंग उपकरण 18. लचीले ब्लेड चाकू 19. पिन रोलिंग 20. चिकित्सकीय उपकरण 21. मिट्टी सेट करने की बन्दूक।

इनके अतिरिक्त समकालीन कला में विभिन्न वस्तुओं का प्रयोग चित्र, मूर्ति व अन्य कलाओं में किया जा रहा है। क्योंकि आज का कलाकार प्रयोगधर्मी है, वह समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए नये–नये हथकंडे अपनाता है इसके लिए वह हर उस वस्तु का प्रयोग अपनी कलाकृति में कर रहा है जिसे वो उचित समझता है। सूईं– धागे से लेकर बड़े से बड़े वाहन या मशीनों तक को उसने नहीं छोड़ा है। इसलिए आज उसकी कृति में घरेलू वस्तुएं, दैनिक जन–जीवन से जुड़ी वस्तुएं, प्राकृतिक वस्तुएं, मानव निर्मित आदि अनेक प्रकार की वस्तुओं के दर्शन हो जाते हैं। इसलिए आज हर कलाकार की अपनी कला, तकनीक, माध्यम और अपनी सामग्री है।

साठ के दशक में एक नारा ''माध्यम ही संदेश है'' कला जगत् में प्रचलित हुआ। वहीं से आधुनिक कलाकार अभिव्यक्ति में माध्यम और तकनीक को प्रमुखता देकर नवीन प्रयोग करने लगे। धीरे–धीरे मानव के विकास के साथ–साथ नयी–नयी प्रविधियों की खोज हुई और माध्यम का क्षेत्र भी असीमित हो गया।तैल रंगों को यदि कैनवास पर प्लास्टिक इमल्शन, पेस्टल या एक्रेलिक के साथ मिलाकर प्रयोग करते हैं तो इसका प्रभाव भिन्न होता है। इसी प्रकार अन्य माध्यमों को भी एक दूसरे के साथ प्रयोग कर नए–नए मिश्रित माध्यमों की खोज की जा रही है। कुछ कलाकार मिश्रित माध्यम का प्रयोग पोत हेतु भी करते है।कलाकारों का मानना है कि तकनीक पर आधारित इस कला का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक तथा अपार सम्भावनाओं से पूर्ण है। इस तकनीक व माध्यम के प्रयोग से वास्तु या स्थापत्य कला, मूर्तिशिल्प, चित्रकला, फोटोग्राफी, प्रिन्टमेकिंग, थियेटर व प्रदर्शन आदि कलाओं की सीमाऐं टूट गयी हैं तथा इसने चाक्षुष अभिव्यक्ति के पारम्परिक रूप को मुक्त कर दिया है।

अब यह स्पष्ट हो चुका है कि समकालीन कलाकार शिल्पी ने सामग्री तथा रूपाकार की पहुँच को बहुत विस्तृत कर दिया है ताकि तकनीकी कौशल एवं सौंदर्यात्मक ऊर्जा को पाया जा सके। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की बजह से उपलब्ध नई पद्धतियों व नयी सामग्री की मदद से उन्होंने वस्तुतः नई दिशाओं को खोज लिया है। आज का कलाकार शिल्पी ऐसी वस्तुओं के निर्माण में विश्वास करता है, जो परिवेश के प्रति अनुकूल हैं और ललित कलाओं के सभी गुणों से युक्त हैं। वह एक ऐसा सृजनकर्त्ता है, जो विभिन्न शिल्पों माध्यमों में हाथ से काम कर आत्मिक सम्मति को पाना चाहता है और ललित शिल्पाकृतियाँ बनाना चाहता है। उसके लिए वह किसी भी सामग्री को अपनी कृति का माध्यम बना सकता है। यह कहना भी गलत न होगा कि आज के दौर में रचना सामग्री ही कलाकार की अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का एक प्रमुख्य माध्यम है जो अपनी भूमिका कलाकृति में बखूबी निभा रही है।